

# भक्ष अभक्ष्य

( खाने एवं न खाने योग्य पदार्थ )

जो पदार्थ खाने योग्य न हों वे अभक्ष्य हैं। रत्न करण्ड श्रावकाचार में अभक्ष्य पदार्थों को पाँच भागों में विभक्त किया है।

१. **त्रस विघातक** : जिस पदार्थ को खाने से द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय यानि त्रस जीवों की हिंसा होती है। वे अभक्ष्य हैं। त्रस जीवों में मांस व खून होता है तदनुसार मांस, मधु, अण्डा, बड़ पीपल, गूलर पाकर, अंजीर फल, पौन घन्टे बाद मक्खन, दही बड़ा आदि पदार्थ अभक्ष्य हैं।
  २. **बहुस्थावर घातक** : जिस पदार्थ को खाने से अनन्त स्थावर जीवों की हिंसा होती है जिन वनस्पतियों को सूर्य का प्रकाश नहीं छूता आलू, अरबी, अदरक, शकरकंद आदि की तरह पृथ्वी के नीचे फैलने वाली वनस्पति जैसे प्याज, लहसुन, गाजर, मूली आदि अनन्त स्थावर जीवों का घर है अतः अभक्ष्य हैं।
  ३. **मादक** : जिन पदार्थों के खाने या पीने से कर्म विकार या आलस्य बढ़ता है वे प्रमाद कारक अभक्ष्य हैं जैसे-शराब, अफीम गांजा, तम्बाकू, चरस, बीड़ी सिगरेट आदि।
  ४. **अनिष्ट** : जो पदार्थ भक्ष्य होने पर भी शरीर में रोगादि उत्पन्न करें, उनसे बचें।
  ५. **अनुपसेव्य** : जो पदार्थ शिष्ट मनुष्यों के सेवन योग्य न हों जैसे गोमूत्र आदि।
- बाजार की वस्तुएं मर्यादा रहित होने के कारण एवं अनछने जल से बनी होने के कारण अभक्ष्य हैं। अर्क, शर्बत, चमड़े में रखी वस्तुएं अभक्ष्य हैं। इसके अलावा २२ तरह के अभक्ष्य पदार्थों का वर्णन भी मिलता है-ओला, दही बड़ा, रात्रि भोजन, बहुबीजा, बैंगन, आचार, बड़, पीपल, ऊमर, कटूमर पाकर जिसे हम नहीं जानते, कंद मूल, मिट्टी, विष, अमिष, शहद, माक्खन, मदिरा, छोटे फल, बर्फ, जिसका स्वाद बिगड़ गया हो।

## 12 माहों में प्रतिकूल

चैते गुड़, बैसाखें तेल, जेठे राई, अषाढ़े बेल,  
सावन निंबू, भादौ मही, क्वार करेला, कार्तिक दही।  
अगहन जीरा, पूसे धना, माघ मसूर, फागुन चना,  
जो नर इन बारह को खाए, बिना निमन्त्रण स्वर्ग जाय ॥  
इन बारह सो बचे जु भाई, ता घर बैद कबै न जाई ॥

## 12 माहों में अनुकूल

चैत चना, बैसाख बेल, जेठे शयन, अषाढ़े खेल,  
सावन हरे, भादों तित्त, क्वार मास गुड़ सेवै नित्त।  
कार्तिक करेला, अगहन तेल, पूस करे दूध से मेल,  
माघ मास घिव खीचड़ खाय, फागुन उठे नित प्रातः नहाय ॥  
इन बारह सो करे मितार्ई, तो काहे घर बैद बुलाई ॥



अपने शरीर की रक्षा तथा वन्य जीवों की रक्षा के लिये  
आहार में संयम व विवेक अपनाना चाहिये।

### सेवनीय भक्ष्य पदार्थों की मर्यादा

ऋतुएं

क्र.सं.	पदार्थ का नाम	शीत	ग्रीष्म	वर्षा
१	बूरा	एक माह	१५ दिन	सात दिन
२	दूध ( यदि स्वाद बिगड़ जाये तो त्याज्य है )	४८ मिनट	४८ मिनट	४८ मिनट
३	दही	२४ घण्टे	२४ घण्टे	२४ घण्टे
४	छाछ	४ प्रहर	४ प्रहर	४ प्रहर
५	घी तेल गुड़	जब तक स्वाद न बिगड़े		
६	आटा सर्व प्रकार	७ दिन	५ दिन	३ दिन
७	मसाले ( पिसे हुए )	७ दिन	५ दिन	३ दिन
८	नमक ( पिसा हुआ )	२ घड़ी	२ घड़ी	२ घड़ी
९	नमक ( मसाला मिला )	६ घण्टे	६ घंटे	६ घंटे
१०	अधिक पानी वाले पदार्थ रोटी पूड़ी हलुआ बड़ा आदि	४ प्रहर	४ प्रहर	४ प्रहर
११	मौन वाले पकवान	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर
१२	मीठे पदार्थ मिला दही	२ घड़ी	२ घड़ी	२ घड़ी
१३	गुड़ मिला दही व छाछ	सर्वथा त्याज्य है		
१४	पानी ठंडा छानने के बाद		( मुहूर्त )	
१५	पानी ठंडा लौंग या सौंफ डालने के बाद		२ प्रहर	
१६	पानी - गुनगुना		२ प्रहर	
	पानी		४ प्रहर	
	पानी - खौलता		८ प्रहर	

एक घड़ी-२४ मिनट

एक मुहूर्त-४८ मिनट

एक प्रहर-३ घंटे

८ प्रहर-२४ घंटे